

पद १८१

(राग: मांड - ताल: धुमाळी)

खुदा गर दे नजर तुमको, तो हर सूरत खुदा की है। जमरुद गाहैर
औ' शमशीर, मगर इक आबदारी है। न आतिश ज्ञात से रौशन न
सूरज चांद तारे हैं। ये सिफते जिससे हैं रोशन वो इक नूरे जलाली
है॥१॥ न मादर खाला औ' हमशीर न दुलहन दुखतरो माशूक।
जिस्म है इक जो इनसानी ये सब दिल की दलाली है॥२॥ खुदा

गर तुम नही होते तो क्यों होती खुदी पैदा। खुदी मैं है जो खुदमस्ती
खुदा की ये निशानी है॥३॥ खुदाई का ये जल्व ऐ नूर मेहबूब
मानिक औ बंदा। फनाकर खुद को अल्लाह मे तू वाहद जात बारी
है॥४॥